कलीसिया अध्याय 2

1.	**प्रार्थना**

समूह अगुवा। परमेश्वर की आत्मा द्वारा अगुवाई पाने, उसकी उपस्थिति के प्रति संवेदनशीलता तथा उसकी आवाज़ सुनने के लिए **प्रार्थना** करें।

अपने समूह तथा कलीसिया निर्माण करने के सम्बन्ध में इस अध्याय को परमेश्वर के हाथों में समर्पित करें।

2.	**बाँटना** (20मिनट) *[शान्त समय]* **मरकुस 4:20-7:37**

अपनी बारी आने पर संक्षेप में **साझा करें** कि आपने दिये गये अनुच्छेद (मरकुस 4:20-7:37) में शान्त समय में क्या सीखा।

अगर कोई व्यक्ति अपनी बात को साझा कर रहा है तो उसकी बातों को ध्यान से सुनें तथा लिखें। उसकी बातों पर चर्चा न करें।

3.	**याद करना** (5 मिनट) *[मसीही चरित्र]* **(2) 1 पतरस 2:11**

दो दो करके पुनरावलोकन करें।

(2) पवित्रता: 1 पतरस 2:11। हे प्रियो, मैं तुम से बिनती करता हूँ कि तुम अपने आप को परदेशी और यात्री जानकर उस सांसारिक अभिलाषाओं से जो आत्मा से युद्ध करती हैं बचे रहो।

4	**बाइबल अध्ययन** (85मिनट) *[मसीही चरित्र]* **यूहन्ना रचित सुसमाचार का परिचय**

बाइबल के सारे वचन यूहन्ना रचित सुसमाचार से लिये गये है।

आईये साथ मिलकर हम ***पढ़ें और चर्चा करें।***

क. यूहन्ना रचित सुसमाचार का लेखक

यूहन्ना रचित सुसमाचार का रचयिता स्वयं परमेश्वर,पवित्र आत्मा है(2 तीमुथीयुस 3:16; 2पतरस 1:20-21)
लेखक प्रेरित यूहन्ना है।

1.लेखक यहूदी था।

(1) वह इस्राएल की भौगौलिक परिस्थितियों से भली भांति परिचित है।

उदाहरण के लिए वह काना,कपरनहूम और गलील में बेतसैदा,शालेम के निकट ऐनोन(3:23),इफ्राईम नामक गांव (11:54)और खासतौर पर यरूशलेम जैसी जगहों को जानता है। वह यह भी जानता है "कि यरदन नदि के पार बैतनिय्याह (1:28) यरूशलेम से केवल " (दो या तीन मील की दूरी पर) पाये जाने वाले बैतनिय्याह से अलग है(11:28)।

(2) वह उस समय में इस्राएल की राजनीतिक परिस्थिति से भी परिचित था।

उदाहरण के तौर पर,वह अच्छी तरह से जानता था कि बहुत से यहूदी गैर यहूदी राष्ट्रों में रहते थे(11:52); वह जानता था कि "यहूदियों का सामरियों के साथ उठना बैठना नहीं था"(4:9)और यहूदियों पर रोमियों का राज्य चलता है(11:48)। वह जानता था कि यहूदी सिन्हेद्रिन को किसी को मृत्यु का दण्ड देने का अधिकार नहीं था और इस तरह का निर्णय केवल रोमी गर्वनर ही ले सकता है(18:28,31)।

(3) उसे पुराने नियम के उत्तम जानकारी थी।

वह पुराने नियम को इब्रानी व यूनानी दोनों ही भाषा में जानता था क्योंकि वचनों को उद्धत करते समय दोनो ही भाषाओं का इस्तेमाल किया है।

(4) उसने यहूदियों और सामरियों की धार्मिक मान्यताओं को हवाला दिया।

उदाहरण के लिए:"उद्धार यहूदियों में से है"(4:22)व "सामरी ग्रिरेसिम पर्वत पर आराधना करते हैं यरूशलेम में नहीं।"(4:20)।

(5) उसे यहूदी धार्मिक पर्वों की भी जानकारी है।

उदाहरण के लिए:"तैयारी का दिन" (19:31),"फसह का पर्व","तम्बू का पर्व"(7:2)"स्थापना पर्व"(10:22)

(6) उसने यहूदी रीतियों का वर्णन किया तथा स्वाभाविक तरीकों का परिचय दिया।

उदाहरण, यहूदियों के विवाहों की यह रीति थी कि वे अपने मेहमानों को पहले उत्तम दाखरस पिलाया करते थे और बाद में मध्यम।(2:10)। यहूदी लोगों में दफनाते समय शव को लिनेन के कपड़े से लपेटकर उसके साथ कुछ सुगन्धित पदार्थों व मसालों को रखा जाता था, कपड़ा उसके मुंह तक लपेटा जाता था, उसे किसी गुफा या कब्र में रखकर उसे एक बढ़े पत्थर से ढाँप दिया जाता था। (11:38,44;19:40)

2.लेखक एक चश्मदीद गवाह था।

लेखक ने यीशु के कामों को स्वयं अपनी आँखों से देखा था। उसे भलि प्रकार से याद था कि कौन सी घटना कब हुई थी,और बहुत सी बार उसने बिल्कुल ठीक समय का भी उल्लेख किया है। क्योंकि यीशु की मृत्यु पश्चात सदी के अन्त में गैर यहूदियों को लिख रहा था,सम्भवत:उसने समय को आंकने के लिए रोमी तरीके का इस्तेमाल किया, जिसके तहत समय या तो मध्य रात्रि या दोपहर से गिना जाता है। उदाहरण के लिए, उसे याद था कि वह यीशु से पहली बार उसके ठीक बपतिस्मा लेने के बाद मिला था। और यह दिन का करीब दसवां घण्टा था(1:35,39)अर्थात लगभग सुबह 10 बजे।

उसे याद था कि जब यीशु ने शमौन का "पतरस" नाम से सम्बोधित किया तब उसने उससे क्या बात की(1:42), यीशु ने अन्य चेलों को बुलाते समय तथा प्रचार करते समय भी ठीक वे ही शब्दों का इस्तेमाल किया। यूहन्ना रचित सुसमाचार हमें दिखाता है कि लेखक ने केवल यीशु के शब्दों को ही नहीं सुना लेकिन उन बातों को भी लिखा जो यीशु ने अपने चेलों की बातों के जवाब में कही थीं। हो सकता है कि उसने यीशु की बातों को याद कर लिया हो।

3.लेखक यीशु के बारह चेलों में से एक था।

लेखक को यीशु के चेलों की प्रतिक्रियाओं,शब्दों और भावनाओं की अति घनिष्ठ जानकारी थी। उदाहरण के लिए, वह जानता था कि जब चेलों ने यीशु को स्त्री के साथ बातें करते हुए देखा तो वे अचम्भित हो गये(4:27),या जब उन्होंने यीशु को पानी पर चलते हुए देखा तो वे डर गये(6:19)।

4. लेखक प्रेरित यूहन्ना था।

(1) लेखन ने पूरी पुस्तक में अपना नाम कहीं नहीं लिया।

वह अपने बारे में लिखता है कि "वह चेला जिसे यीशु प्रेम करता था"।यही वह चेला था जो अन्तिम भोज के समय यीशु पर टेक लगाकर बैठा हुआ था(13:23,25)। यह वही चेला है जो आंखों देखी और कानों सुनी बातों की गवाही देता है (21:20-24; 1यूहन्ना 1:3)

(2) लेखक यीशु के प्रथम चेलों में से एक था।

यूहन्ना 1:35-40 और मरकुस 1:16-20 के अनुसार, यीशु द्वारा सबसे पहले चुने गये चेले इन्द्रियास व उसके भाई,शमौन पतरस, और यूहन्ना व उसके भाई थे। पतरस, याकूब और यूहन्ना यीशु के अति घनिष्ठ चेले थे (मत्ती17:1)। प्रेरितों 12 के अनुसार याकूब हो हेरोद मरवा दिया गया जब यूहन्ना 21:18-19 के अनुसार पतरस इस तरीके से मरा जिससे परमेश्वर को महिमा मिली। अत: एक मात्र चेला जो अपनी आंखों देखा हाल और अपने कानों सुनी बातों को लिख सकता था वह प्रेरित यूहन्ना था।

(3) लेखक जबदी का पुत्र था।

मत्ती 27:56,मरकुस 16:1 और यूहन्ना 19:25, उसकी माता सम्भवत: सलोमी थी जो सम्भवत: यीशु की माता मरियम की बहिन थी। यदि यह बात सत्य है तो यीशु और यूहन्ना आपस में मौसेरे भाई थे। यीशु का चेला बनने से पहले वह यीशु का अनुयायी था। यूहन्ना 1 के अनुसार,वह यीशु को उसके बपतिस्में के तुरन्त बाद मिला। यीशु द्वारा उसे बुलाये जाने के बाद भी वह लगभग एक वर्ष तक अपने पिता की नाव पर मछुवारे का काम करता रहा। बाद में उसने मछली पकड़ने के काम को छोड़कर "मनुष्यों को पकड़ने वाले" मछुवारा पसन्द किया" (लूका 5:1-11;मत्ती 4:19)

(4) ऐसा प्रतीत होता है कि यूहन्ना और याकूब जल्दी गुस्सा करने वाले जन थे।

उन्हें बाइबल में 'गर्जन के पुत्र'के नाम से सम्बोधित किया गया है(मरकुस 3:17)। उदाहरण के लिए, मरकुस 9:38-41 में यीशु यूहन्ना ने एक व्यक्ति को यीशु के नाम में सेवा निभाने से मना किया क्योंकि वह यीशु का एक चेला नहीं था। जब एक सामरियों के गांव वालों ने यीशु व उसके चेलों को स्वीकार करने से मना कर दिया(अर्थात उन्हें भोजन व रहने का स्थान नहीं दिया) तो यूहन्ना और याकूब के गुस्सा फूट पड़ा और वे कहने लगे,"हमें आज्ञा दे कि हम स्वर्ग से आग बुलाकर इन्हें नष्ट करें।"(लूका 9:51-56)?

(5) यूहन्ना सर्वाधिक महत्वपूर्ण प्रेरितों में से एक था।

चारों सुसमाचारों और प्रेरितों के काम में भी अगर हम देखें तो यूहन्ना ज्यादातर पतरस के साथ ही रहा करता था। यीशु के पुनरूत्थान के बाद, यूहन्ना को पतरस व यीशु के भाई याकूब के साथ साथ "कलीयिसा के स्तम्भ" का दर्ज़ा दिया गया(गलातियों 2:9; प्रेरितों 15:6)। जब यहूदियों ने रोम के खिलाफ 66 ईसा प. विद्रोह किया, उस समय यूहन्ना और अन्य मसीहियों ने यरूशलेम छोड़ दिया था। कलीसिया के इतिहास के अनुसार, यूहन्ना जाकर इफिसुस में बस गया और वहीं काम करने लगा।

ख.यूहन्ना रचित सुसमाचार लिखने का स्थान व तिथि

1. यूहन्ना रचित सुसमाचार लिखने का स्थान

170 ईसा प. जीवित फादर इरीनाइस के अनुसार, यूहन्ना रचित सुसमाचार यूहन्ना द्वारा इफिसुस में रहते ही लिखा गया जो वर्तमान काल में टर्की के नाम से जाना जाता है।

2.यूहन्ना रचित सुसमाचार लिखे जाने की तिथि।

(1) यूहन्ना रचित सुसमाचार 110 ईसा.प. में लिखा गया था।

यूहन्ना रचित सुसमाचार के दो पौराणिक अंश (यूहन्ना 18531-34 व 37-38) 130 ईसा.प. से पहले लिखे गये थे। अत: यह सम्भव है कि सुसमाचार भी उससे पहले ही लिखा गया होगा। फादर इरीनाइस लिखने है कि "इफिसुस की कलीसिया की बुनियाद पौलुस ने रखी थी, और यूहन्ना रोमी सम्राट ट्राजन के समय तक वहा स्थायी तौर पर रहा। ट्राजन ने 98-117 ईसा.प.तक राज्या किया। कलीसिया के फादर इग्नाटीअस, जो 10 ईसा.प. में शहीद हो गये थे,स्पष्टता से बताते हैं कि उन्होंने यूहन्ना रचित सुसमाचार को पढ़ा था। अत: हम कह सकते हैं कि यूहन्ना रचित सुसमाचार सम्भवत: प्रथम शताब्दि के अन्त में लिखा गया था।

(2) यूहन्ना रचित सुसमाचार 70 ईसा प. लिखा गया था।

प्रेरित यूहन्ना ने उन बातों को नहीं दोहराया जिसका अन्य सुसमाचारों में वर्णन किया गया है और उसे भरोसा था कि लोग उन्हें जानते हैं। उनका मकसद उन बातों पर प्रकाश डालना था जो अन्य सुसमाचारों में नहीं लिखी गयीं खास तौर पर वे बातें जो लोगों को विश्वास करने के लिए विवश करे कि यीशु की मसीह है(मसीह अर्थात अभिषिक्त जन)(यूहन्ना 20:31) और वह शतप्रतिशत ईश्वरीय है(यूहन्ना 1:1)। अत: यूहन्ना रचित सुसमाचार बाकि के सारे सुसमाचारों के लिखने के बाद लिखा गया होगा, और सम्भवत: 63 ईसा प. लिखा गया होगा। क्योंकि यूहन्ना उस समय के प्रसिद्ध प्रेरित पतरस और पॉलूस के बारे में कोई टिप्पणी नहीं करता जिससे ऐसा प्रतीत होता है कि वे इस समय तक पहले ही मर चुके थे। इसके अलावा यरूशलेम और इसके मन्दिर के पतन के बारे में कुछ भी नहीं लिखा है। अत: यूहन्ना रचित सुसमाचार सम्भवत: यरूशलेम के पतन के कुछ वर्षों बाद 70 ईसा.प. लिखा गया था।

(3) इस तरह हम इस निष्कर्ष पर पहुंचते हैं कि यूहन्ना रचित सुसमाचार 70 से 98 ईसा.प के बीच में लिखा गया था।

एलिक्ज़ेंड्रिया के फादर, जो 190 ई.प. भी जीवित थे, ने लिखा कि यूहन्ना के पतमुस टापू से वापिस लौटने के बाद भी यूहन्ना कलीसिया में मुख्य प्रशासक के रूप में सक्रिय सेवा करता रहा जो कलीसिया इफिसुस जिले में स्थित था। हमें यह जानकारी नही है कि यूहन्ना रचित सुसमाचार यूहन्ना के पतमुस टापू पर सज़ा के रूप में भेजे जाने से पहिले लिखा गया था बाद में और हमें इस बारे में भी जानकारी नहीं है कि यह प्रकाशितवाक्य की पुस्तक से पहले लिखा गया था कि बाद में।

ग.यूहन्ना रचित सुसमाचार का विभाजन

यूहन्ना रचित सुसमाचार को दो भागों में बांटा जा सकता है, जिसको हम यीशु की सार्वजनिक व निजी सेवाकाई कह सकते हैं। इन दो भागों को भी सात खण्डों में विभाजित किया जा सकता है:

भाग एक: यीशु मसीह की सार्वजनिक सेवाकाई

इसमें यूहन्ना 1 से 12 तक अध्याय शामिल हैं। इसे भी तीन निम्नलिखित भागों में विभाजित किया जा सकता है:

खण्ड 1. यूहन्ना अध्याय 1 से 6

तम्बू के पर्व के पहले तक (7:2)।

यीशु मसीह, शब्द, दर्शाता है कि वह हमेशा लोगों से घिरा हुआ था,मगर लोगों ने उसे ग्रहण नहीं किया।

(1) यीशु मसीह का उदघाटन। यूहन्ना 1:1 से 2:12

दिसम्बर 26 ईसा प. से अप्रैल 27 ईसा प. तक (4 महीने)।

- यूहन्ना 1:1-14 सृष्टि से पहले,सृष्टि के समय, पाप में पतन के बाद तथा देहधारण के समय,जब परमेश्वर ने मसीह के रूप में मनुष्यों का रूप धारण किया, परमेश्वर के वचन की महिमा का वर्णन करते हैं।
- यूहन्ना 1:15 से 2:12 में वचन बताता है, कि यीशु मसीह ने अपने आप को यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले और अपने प्रारम्भिक चेलों पर प्रगट किया।

(2) यहूदिया और सामरिया में यीशु मसीह की प्रारम्भिक सेवाकाई । यूहन्ना 2:13 से 4:22। अप्रैल 27 ईसा.प. से दिसम्बर 27 ईसा.प.तक (8 माह)

- यूहन्ना 2:13 से 3:36में वचन अर्थात यीशु मसीह ने यरूशलेम में भीड़ पर अपने आप को प्रगट किया जिसमें निकेदमुस भी था।
- यूहन्ना 4 में वचन अर्थात यीशु मसीह ने अपने आप को सामरियों पर प्रगट किया।

(3) यीशु मसीह की गलील में महान सेवाकाई। यूहन्ना 4:43 से 6:71।

दिसम्बर 27 ईसा.प. से अप्रेल 29 ईसा प. तक (16 महीने)।

- यूहन्ना 4:43-54 ने अपने आप को गलीलियों पर प्रगट किया।
- यूहन्ना 5 में वचन अर्थात यीशु मसीह, बेतहसदा में चमत्कार करने के बावजूद अस्विकृत हुए।
- यूहन्ना 6 में वचन अर्थात यीशु मसीह को पांच हजार लोगों को भोजन कराने के बाद भी अस्विकृत किया गया।

खण्ड 2. यूहन्ना अध्याय 7 से 10 तक

तम्बू के पर्व से लेकर स्थापना के पर्व तक ।

(1) यीशु मसीह की सेवानिवृत सेवाकाई । यूहन्ना 7:1-9।

अप्रेल 29 ईसा.प. से अक्टूबर 29 तक (6 माह)

- यूहन्ना 7:1-9 दर्शाता है कि वचन अर्थात यीशु मसीह गलील में जाते हैं लेकिन बाद में वह गुप्त रूप में यहूदिया को चले जाते हैं।

(2) यहूदिया में यीशु मसीह की अन्तिम समय की सेवाकाई । यूहन्ना 7:10 से 10:39।

अक्टूबर 29 ईसा.प.से दिसम्बर 29 ईसा.प. तक (2माह)

- यूहन्ना 7:10-53 में मन्दिर में यीशु मसीह द्वारा भीड़ से की जानी वाली विनती को दर्शाया गया है।"यदि कोई प्यासा हो तो मेरे पास आए और पीए। जो मुझ पर विश्वास करेगा,जैसा पवित्रशास्त्र में आया है,उसके हृदय में से जीवन के जल की नदियां बह निकलेंगी।" (7:37-38)
- यहून्ना 8:1-59 में यीशु द्वारा व्यभिचार में पकड़ी गयी स्त्री से किये जाने वाले आग्रह को दर्शाया गया है। "जा फिर कभी पाप न करना।"(8:11)। यह भीड़ से किये गये आग्रह को भी दर्शाता है। "जगत की ज्योति मैं हूँ; जो मेरे पीछे हो लेगा वह अन्धकार में न चलेगा, परन्तु जीवन की ज्योति पाएगा।"(8:12)
- यूहन्ना 9:1-41 में यीशु द्वारा जन्म के अन्धे से किये गये आग्रह को दर्शाया गया है। "क्या तू परमेश्वर के पुत्र पर विश्वास करता है?" "तू ने उसे देखा भी है, और जो तेरे साथ बातें कर रहा है वह वही है"।(9:35,37)
- यूहन्ना 10:1-39 में यीशु मसीह द्वारा फरीसियों और चेलों से किये गये आग्रह को दर्शाया गया है। "अच्छा चरवाहा हूँ, अच्छा चरवाहा भेड़ों के लिए अपने प्राण देता है। मेरी भेड़ें मेरा शब्द सुनती हैं; मैं उन्हें जानता हूँ, और वे मेरे पीछे पीछे चलती हैं।"(10:11,27)।

खण्ड 3 -यूहन्ना 10:40 से 12:50

स्थापना के पर्व के बाद

वचन अर्थात यीशु मसीह ने दो सामर्थ्यी चमत्कारों के द्वारा अपने आपको स्पष्ट तौर पर मसीह के रूप में प्रगट किया: लाज़र को मुर्दों में से जीवित करके तथा यरूशलेम में विजय प्रवेश के द्वारा।

पिरिया व बेतनिय्याह में यीशु मसीह की सेवाकाई। यूहन्ना 10:40 से 11:57

दिसम्बर 29 ईसा.प से 30 अप्रेल ईसा.प (4 महीने)।

- यूहन्ना 11:1-44। यीशु ने लाज़र को जीवित करने के लिए यरदन के एक छोर (पीरिया)से ले बेतनिय्याह तक यात्रा की, जो कि यरूशलेम के नज़दीक है।
- यूहन्ना 11:45-57 में सिन्हेद्रिन में यहूदी अगुवों की गोष्टी के बारे में बताया गया है जिसमें उन्होंने यीशु को मारने का षड़यन्त्र रचा।
- यूहन्ना 12:1-50 में बेतनिय्याह में यीशु के अभिषेक व यरूशलेम में यीशु के विजय प्रवेश का जिक्र किया गया है।

भाग 2-यीशु मसीह की निजी सेवाकाई

यीशु मसीह की निर्णायक सेवाकाई। यूहन्ना 13 से 21 तक।

अप्रेल 30 ई.प. से मई 30 ई.प तक (7 सप्ताह)।

इसमें यूहन्ना 13 से 21 अध्याय तक शामिल हैं। यह काल यीशु के इस धरती पर बिताए अन्तिम सात सप्ताह को दर्शाते हैं, जो यीशु के क्रूसीकरण (यूहन्ना 12:1)से प्रारम्भ होकर उसके क्रूसीकरण के छः सप्ताह बाद (प्रेरितों1:3) तक चला। इसे भी चार निम्नलिखित भागों में खण्डित किया जा सकता है।

खण्ड 4: यूहन्ना अध्याय 13। अन्तिम भोज।

- यीशु ने एक दूसरे को प्रेम करने की नयी आज्ञा दी और उसे चेलों के पैर धोने के द्वारा करके दिखाया।

खण्ड 5: यूहन्ना अध्याय 14-17। अन्तिम भोज पर यीशु की प्रार्थना और उसके उपदेश।

- यूहन्ना अध्याय 14, यीशु अपने चेलों को सात्वनां प्रदान करते हैं। उसने उनसे पवित्र आत्मा की निरन्तर उपस्थिति की प्रतिज्ञा की और आश्वासन दिया कि उसके चेले उससे भी बड़े बड़े काम करेगें।
- यूहन्ना 15 में,यीशु ने अपने चेलों को प्रोत्साहित किया। यीशु ने उन्हें लगातार उसमें बने रहने, उसके वचनों को अपने जीवन में बसाने,प्रार्थना करने,फलवन्त होने,एक दूसरे से प्रार्थना करने, उसकी आज्ञा मानने और संसार में उसकी गवाही देने के लिए प्रोत्साहित किया।
- अध्याय 16 में,यीशु ने अपने चेलों से प्रतिज्ञाएं की। उसने उनसे प्रतिज्ञा की कि वह उन्हें कभी अकेला न छोड़ेगा वरन उनके लिए पवित्र आत्मा को भेजेगा और उसने प्रतिज्ञा की कि वे उसे उसके पुनरूत्थान के बाद पुन: देखेगें।
- अध्याय 17 में यीशु प्रार्थना करते हैं। वह अपने लिए(17:1-5),अपने चेलों के लिए(17:6-19) और सार्वभौमिक कलीसिया के लिए प्रार्थना करते हैं।

खण्ड 6: यूहन्ना अध्याय 18-19

यीशु मसीह की तकलीफें।

- यूहन्ना अध्याय 18, यीशु का गिरफ्तार किया जाना, हन्ना के समक्ष प्रस्तुत किया जाना, पतरस के द्वारा इनकार किया जाना, कैफा के सामने पूछताछ के लिए पेश होना, दो और बार पतरस द्वारा इनकार, और अन्त में पिलातुस के समक्ष पेश किया जाना।
- यूहन्ना 19 अध्याय, रोमी सैनिकों द्वारा यीशु को सताया गया, यहूदियों द्वारा यीशु को अस्वीकार करके क्रूस की मांग किया जाना,रोमियों द्वारा खोपड़ी के स्थान अर्थात गुलगुत्ता में क्रूस पर लटकाया जाना और अन्त में उसकी मृत्यु के पश्चात अरिमतिया के युसुफ और निकेदुमुस द्वारा उसे नये बगीचे की कब्र में गाड़ा जाना।

खण्ड 7: यूहन्ना अध्याय 20 से 21

यीशु का पुनरूत्थान तथा पुन:दर्शन

- यूहन्ना 20 अध्याय में,यीशु मरियम मगदिलीन को दिखाई दिये,फिर वे अपने चेलों को दिखाई दिये जिसमें थोमा शामिल नहीं था, फिर वह दोबारा अपने चेलों पर प्रगट हुआ और इस बार थोमा भी वहाँ था। यूहन्ना 20:30-31 में लेखक ने सुसमाचार के उद्देश्य को लिखा।

- यूहन्ना 21 अध्याय में, यीशु गलील की झील के पास अपने सात चेलों पर प्रगट हुआ तथा उसने वहाँ पतरस को प्रेरित के रूप में ज़िम्मेदारी सौंपी। इसके बाद लेखक ने सुसमाचार को बहुत से लोगों की गवाहियों और उनके विश्वासयोग्य कामों के उल्लेख के साथ समाप्त किया।

घ.यूहन्ना रचित सुसमाचार का विषय और उद्देश्य

प्रेरित यूहन्ना स्पष्ट रूप से यूहन्ना 20:30-31 में उसके उद्देश्य का वर्णन करता है। उसका उद्देश्य यह था कि उसके पाठक लगातार विश्वास करते रहें कि यीशु ही "मसीह" (प्रतिज्ञा किया हुआ अभिषिक्त जन है जिसके लिए सम्पूर्ण पुराने नियम में अपेक्षा की जा रही थी)और "परमेश्वर का पुत्र"(कि वह शतप्रतिशत ईश्वरीय है; कुलु 1:15;2:9) है। उसका उद्देश्य यह भी था कि वे यीशु के द्वारा जीवन पाएं जो परमेश्वर व मनुष्यों के बीच एक मात्र मध्यस्थ है।
अन्य तीन सुसमाचारों से हटकर, कुछ भिन्न बातों का उल्लेख यूहन्ना रचित सुसमाचार में किया गया है जो निम्नलिखित हैं:

अध्याय 1 में,यीशु को एक परमेश्वर के रूप में दर्शाया गया है जिसने मनुष्य का रूप धारण किया। यीशु मसीह ने अदृश्य परमेश्वर को मनुष्यों पर प्रगट किया।

अध्याय 3 में, यीशु ने निकेदुमुस पर यह प्रगट किया कि वह ही परमेश्वर का इकलौता पुत्र है, और उस पर विश्वास करने वालों को परमेश्वर अनन्त जीवन प्रदान करता है।

अध्याय 5 में, यीशु ने फरीसियों पर यह प्रगट किया कि परमेश्वर उसका पिता है और वह परमेश्वर के समान है(5:17-18)।

अध्याय 7 में, यीशु ने यरूशलेम में भीड़ के सामने यह प्रगट किया कि केवल वह ही मनुष्य की आत्मिक प्यास को बुझा सकता है। (7:37-39)

अध्याय 8 में,यीशु ने इस्राएल के धर्म गुरूओं पर यह प्रगट किया कि केवल वह की लोगों को पापों और मृत्यु से मुक्त कर सकता है। और उसने कहा कि वह निष्कलंक है और जो कोई उस पर विश्वास नहीं करता,वह निश्चय ही पापों में मरेगा (8:46,24)

अध्याय 12 में, यीशु ने भीड़ अर्थात लोगों पर यह प्रगट किया कि वह राजा है और वह संसार के सारे लोगों को अपने पास खींच लेगा (12:13,32)

अध्याय 13 में, यीशु ने यूहन्ना पर प्रगट किया कि परमेश्वर पिता ने सभी चीज़ों का यीशु के अधीन कर दिया है(3:35;13:30) और जो कोई यीशु को ग्रहण करता है,वह परमेश्वर पिता को ग्रहण करता है(13:20)।

5	**प्रार्थना** (8 मिनट)	***[प्रतिक्रियाएं]*** **दूसरों के लिए प्रार्थना करें**

अपनी बारी आने पर आपने जो कुछ आपने सीखा है *उसके प्रतिउत्तर के रूप में समूह में प्रार्थना करें।*
या समूह को दो या तीन भागों में बांट लें और आज प्राप्त शिक्षाओं के प्रतिउत्तर के रूप में परमेश्वर से प्रार्थना करें।

6	**तैयारी** (2 मिनट)	**[निर्धारित कार्य]** **अगले अध्याय के लिए**

(समूह के अगुवे. समूह के सदस्यों को लिखित रूप में यह तैयार सामग्री प्रदान करें। या उन्हें इसकी पेपर पर नकल करने को कहें।)

1. समर्पण : चेले बनाने तथा मसीह की कलीसिया की स्थापना करने के प्रति समर्पित हों
2. यूहन्ना रचित सुसमाचार के परिचय पर -किसी दूसरे व्यक्ति या समूह को -प्रचार करें,शिक्षा दें या बाइबल अध्ययन पर ध्यान लगाएं।

3. परमेश्वर के साथ व्यक्तिगत समय। **मरकुस 8:1-11:19** में से आधे अध्याय पर एकान्त में मनन करें। पसन्द आने वाले विचार को लिखने के तरीके का इस्तेमाल करें। नोट्स बनाएं।

4.याद करें। (3)**प्रेमः मरकुस 12:30-31।** रोज कम से कम 5 उन बाइबल आयतों को दोहराए जिन्हें आपने पहले याद किया था।

5. प्रार्थना। इस सप्ताह किसी विशेष व्यक्ति या परिस्थिति के लिए प्रार्थना करें और देखें कि परमेश्वर क्या कर रहा है (भजन 5:3)।

6. मसीह की कलीसिया बनाने के सम्बन्ध में अपने लेखे का अद्यपन करें । जिसमें आराधना, शिक्षा सामग्री तथा इस तैयारी की सामग्री को शामिल करें।